**Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)**
(*Peer Reviewed Hindi Journal*)

ISSN 2454-2695
Vol 10 Issue 12
May 2024

# भारतीय फिल्म उद्योग के माध्यम से हिंदी भाषा की वैश्विक लोकप्रियता

**डॉ. प्रीति व्यास**
आय. पी. एस. अकादमी ,इंदौर
सहायक प्राध्यापक
vyaspreeti19@gmail.com

**शोध संक्षेप -**

*मनोरंजन का मानव जीवन से गहन संबंध है| प्राचीन काल से ही मनुष्य मनोरंजन के माध्यम से खुशी और शांति खोजता रहता है|समय परिवर्तन के साथ मनोरंजन के साधन भी परिवर्तित होते हैं| प्रारंभ में व्यक्ति जहां रामलीला रासलीला तथा नाटकों के माध्यम से सेअपना मनोरंजन करते थे|वर्तमान समय में तो मनोरंजन केअनेक साधन है उसमें सिनेमा एक सशक्त एवं प्रभावशाली साधन है क्योंकि यह मानव जीवन से संबंधित होता है इसमें जीवन का यथार्थ होता है जिस तरह से साहित्य समाज का दर्पण होता हैउसी तरह से सिनेमामें भी वही सब दिखाया जाता है|जोउस समय समाज में घटित होता है|इसलिए यह व्यक्ति को सीधे प्रभावित करने की क्षमता रखता है|प्रस्तुत शोध पत्र में सिनेमा के माध्यम से हिंदी भाषा की वैश्विक लोकप्रियता पर प्रकाश डाला गया है|*

*Received on 02 December 2024*
*Revised on 16 December 2024*
*Published on 20 December 2024* *DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.14534691*

ISSN 2454-2695
Vol 10 Issue 12
May 2024

हिंदी के इस तीव्र विकास में जहाँ प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है ,वहीं हिंदी फिल्मों ने भी हिंदी के प्रचार प्रसार में, उसे जन- जन तक पहुंचाने में तथा विश्व व्यापी बनाने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। हिंदी फिल्में भारत के साथ -साथ विदेशों में भी अत्यंत लोकप्रिय है।

सिनेमा का आरंभ लगभग108 वर्षपूर्व 1896मेंहुआ था ,तब तक फिल्में मूक हुआ करती थी |भारतीय सिनेमा का आरंभ 1913 से माना जाता है|भारत की पहली मूक फिल्म दादा साहेब फालके द्वारा निर्मित राजा हरिश्चंद्र थी | 1920 के दशक की शुरुआत में कई नई फिल्म निर्माण करने वाली कंपनियां आई|

इस दशक में रामायण तथा महाभारत की कथा परआधारित फिल्मों का बोलबाला रहा औरआर्देशिर ईरानी द्वारा निर्मित ध्वनि सहित पहली फिल्म ' आलम आरा ' थी, जो की सन1931में प्रदर्शित हुई|यह भारत की पहली ध्वनि फिल्म थी|

सन1931मे आलम आरा के लिए रिकॉर्ड किया गया पहला गीत दे दे खुदा के नाम पर था |यह वाजिर मोहम्मद द्वारा गाया गया था|1930 से 1940 के बीच कई फिल्म हस्तियों जैसे देवकी बोस ,चेतन आनंद एस एस वासन नितिन बोस और कई अन्य प्रसिद्ध कलाकारों ने परदे पर अपनी कला का जादू बिखेरा |

आधुनिक फिल्म उद्योग का जन्म 1947 के आसपास हुआ था |इस अवधि में सत्यजीत रे तथा विमल रॉय प्रमुख फिल्म निर्माता रहे| इस समय की फिल्मे निचले वर्ग के अस्तित्व तथा दैनिक दुखों पर केंद्रित थी |इस समय की फिल्मे वैश्यावृत्ति ,दहेज़ बहुविवाह और अन्य भ्रष्टाचार जैसे विषयों पर आधारित थी ,जो हमारे समाज में प्रचलित थे|

1960 के दशक में ऋत्विक घटक मृणाल सेन जैसे फ़िल्म निर्माताओं ने आम आदमी की वास्तविक समस्याओं पर जोर दिया, इन निर्माताओं की फिल्मो ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी जगह बनाई। उन्होंने कुछ बेहतरीन फिल्मो का निर्देशन किया जिसने भारतीय फिल्म उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म परिदृश्य में जगह बनाने में सक्षम बनाया |

*Received on 02 December 2024*
*Revised on 16 December 2024*
*Published on 20 December 2024* *DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.14534691*

ISSN 2454-2695
Vol 10 Issue 12
May 2024

60 के दशक से ही हिंदी सिनेमा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली थी| 1950 -60 का युग सिनेमा के इतिहास का स्वर्ण युग मन जाता है ,क्योकि इस युग में गुरु दत्त राज कपूर दिलीप कुमार मीना कुमारी मधुबाला, नरगिस, नूतन, देवानंद और वहीदा रहमान जैसे कुछ यादगार कलाकारों का उदय हुआ, जिनके अभिनय तथा संवादशैली से केवल भारतीय ही नहीं वरन विदेशी भी बहुत प्रभावित हुए। भारतीय फिल्मों का गीत एक अभिन्न अंग है। भारतीय फिल्मों में गीतों की उपस्थिति ने इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अलग ही पहचान दिलाई है । सूचना प्रोद्योगिक के विकास के साथ साथ हिंदी फिल्मों ने वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता प्राप्त की है। प्रारम्भ में रामायण और महाभारत पर आधारित कई फिल्में बनी,जिनके चरित्रों तथा कथा वस्तु से विदेशी बहुत अधिक प्रभावित हुए ,इन धार्मिक ग्रंथो का दर्शन समझने के लिए विदेश में हिंदी भाषा के प्रति रुझान देखने को मिला। इसी सन्दर्भ में हम कामिल बुल्के का उदहारण दे सकते है - "कामिल बुल्के जिनका जन्म 1 सितम्बर 1909 को बेल्जियम के वेस्टफ्लेडर्स प्रान्त के एक गांव रैम्पस में हुआ था। वे भारतीय दर्शन से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे |1932 में दर्शन शास्त्र में एम. ए. करने के बाद उन्होंने 1935 में भारत आकर न केवल हिंदी सीखी बल्कि 1950 में रामकथा पर पी एच डी की डिग्री भी हासिल की । " 1

आज दुनिया के 3० देशो में फैले 1०० से अधिक विश्व विद्यालयों में ,भाषा संस्थानों,अध्ययन केन्द्रो में हिंदी का पठन और पाठन हो रहा है।

फ़िल्मी गानें तथा फ़िल्मी संवाद के माध्यम से हिंदी भाषा सीखने का कार्य अत्यंत आसान हो जाता है इसे हम इस सन्दर्भ से इस तरह देख सकते है -"हिंदी की फिल्मों ,गानों टीवी कार्यक्रमों ने हिंदीको कितना लोकप्रिय बनाया है इसका आकलन करना कठिन है केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की है कि हिंदी फिल्मों को देखकर तथा फ़िल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिंदी सीखने में मदद मिली। " 2

हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में हिंदी फिल्मो का महत्वपूर्ण योगदान है क्योकि हिंदी फिल्मो के गाने और संवाद इतने लोकप्रिय हुए है कि इन गानों को विदेशी न केवल बड़े चाव से सुनते है बल्कि अपनी आजीविका का साधन भी बनाते है यूरोप के देशों में कोलोन,बी बी सी ,ब्रिटिश रेडिओं, सनराइज सबरंग

*Received on 02 December 2024*
*Revised on 16 December 2024*
*Published on 20 December 2024* *DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.14534691*

ISSN 2454-2695
Vol 10 Issue 12
May 2024

के हिंदी सेवा कार्यक्रमों को बड़े चाव से सुनते है। यूरोप के देश में ऐसी गायिकाएँ है जो हिंदी फिल्मों के गाने गाती है तथा स्टेज शो करती है। "3

हिंदी फिल्मों के अभिनेताओं द्वारा बोले गए अनेक ऐसे संवाद है जो अपनी भाषा ,आकर्षक शब्दावली और चुटीले अंदाज के कारण दर्शक श्रोताओ को वर्षो तक याद रहते है। -सदी के महानायक अमिताभ बच्चन और शशि कपूर द्वारा बोले गए फिल्म दीवार के संवाद -"आज मेरे पास गाड़ी है,बंगला है,पैसा है, तुम्हारे पास क्या है ?मेरे पास माँ है। "4आज भी हर किसी की जुबान पर है।

हिंदी फिल्मों में अनेक ऐसे संवाद है जिन्हें दर्शक अपने जीवन में अवसर के अनुसार प्रयोग करते है। इनके जरिए हिंदी भाषा अहिन्दी भाषियों को भी समझ आने लगतीं है ।

इसी तरह हिंदी भाषा के वैश्विक प्रचार प्रसार में हिंदी फिल्मों के गीतों का भी भी अमूल्य योगदान है - "राजकुमार की फिल्म आवारा के गीत' मेरा जूता है जापानी ये पतलून इंग्लिस्तानी 'ने रूस में धूम मचा दी थी। आवारा फिल्म के गानों के माध्यम से हिंदी रूस के लोगों की जुबान पर चढ़ गई। "5

इसी तरह अनेक ऐसी फिल्में है जो अपने गीतों के कारण प्रसिद्ध हुई।

हिंदी फिल्मो को लोकप्रिय बनाने में हिंदी गीतकारों हिंदी संगीतकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। गीतों और हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में फ़िल्मी गायक -गायिकाओं ,उनकी गायन शैली ,उनकी अपनी लोकप्रियता का भी विशेष योगदान रहा है। नेटफ्लिक्स जैसे वैश्विक प्लेटफार्म के कारण भी भारतीय फिल्म और गानों ने विश्व में पहचान के साथ ही लोकप्रियता हासिल की है ,जिससे भी हिंदी के प्रचार प्रसार में योगदान मिला है।

हिंदी फिल्मों में अभिव्यक्त भारतीय जीवन मूल्य ,भारतीय संस्कृति पारिवारिक जुड़ाव वसुधैव कुटुम्बकम तथा सहिष्णुता के भाव ने अप्रवासी भारतीयों को अत्यंत प्रभावित किया है। "भारत भारतीयता से जुड़ने के क्रम में अनेक विदेशियों ने न सिर्फ हिंदी सीखी बल्कि अपने अपने देशो में वे हिंदी के एम्बेसडर भी बने।

"6

*Received on 02 December 2024*
*Revised on 16 December 2024*
*Published on 20 December 2024* *DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.14534691*

ISSN 2454-2695
Vol 10 Issue 12
May 2024

फ़िल्मी नृत्य गीतों पर आधारित टीवी चैनल के कई कार्यक्रम है जैसे इंडियन आइडल सारेगामापा तथा नचबलिए आदि जिसमे केवल भारत के नही बल्कि पूरे विश्व के लोंगो द्वारा बड़ेचाव से देखा जाता है ।

निष्कर्ष -इस तरह हम कह सकते है की हिंदी सिनेमा उद्योग ने अनौपचारिक तथा मनोरंजक ढंग से हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार किया है। हिंदी भाषा ,हिंदी फिल्मों के माध्यम से ,उसके आकर्षक संवादों ,मनमोहक गीतों ,नए -नए जनसंचार माध्यम से तथा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पूरे विश्व में हिंदी भाषी तथा अहिन्दी भाषी में अत्यंत सहज व् स्वाभाविक ढंग से प्रचारित ,प्रसारित व् विकसित हो रही है|हिंदी फिल्मों ने अपने गानों और संवादों से हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा बनाकर वैश्विक स्तर पर हिंदी को लोकप्रिय बनाया ।

## सन्दर्भ

1डॉ मंजू रानी ,हिंदी का वैश्विक परिदृश्य, मानसरोवर प्रकाशन ,पृष्ठ २७नोएडा ,उत्तर प्रदेश, 2017

2 प्रोफेसर महावीर सरन जैन( सेवानिवृत्त निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान ) संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषाए एवं हिंदी ,Bharat khoj.org

3 वहीं

4 रजनी , हिंदी के प्रचार प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान
IJAR,2021:www.allresearchjournal.com,page315

5 रजनी , हिंदी के प्रचार प्रसार में हिंदी सिनेमा का योगदान
IJAR,2021:www.allresearchjournal.com,page316

6 By Kamal Verma
Jagran .com/professor.niranjan-jagran.special-2125721/html

*Received on 02 December 2024*
*Revised on 16 December 2024*
*Published on 20 December 2024* *DOI https://doi.org/10.5281/zenodo.14534691*